श्री राम स्तुति

दोहा

श्रीरामचंद्र कृपालु भज मन, हरण भवभय दारुणं ।
नव कंज लोचन कंज मुख कर, कंज पद कंजारुणं।। १।।

कन्दर्प अगणित अमित छबि, नवनील(नीरज सुंदरम।
पटपीत मानहुँ तड़ित रूचि शुचि, नौमी जनक सुताबरं।। २।।

भजु दीनबन्धु दिनेश दानव, दैत्य बंश निकन्दनं।
रघुनन्द आनन्द कन्द कौशल, चन्द दशरथ नन्दनं।। ३।।

शिर मुकुट कुंडल तिलक, चारु उदारु अंग बिभूषणं।
आजानु भुज शर चाप धर, संग्राम जित खरदूषणं।।४।।

इति वदति तुलसी दास शंकर, शेष मुनि मन रंजनं।
मम हृदय कंज निवास कुरु, कामादि खल(दल गंजनं।।५।।

मनु जाहिं राचेहु मिलिहि सो बरु, सहज सुन्दर साँवरो।
करुणा निधान सुजान शीलू, सनेह जानत रावरो।। ६।।

एहि भांति गौरी असीस सुनी सिय, सहित हियँ हरषी अली।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि, मुदित मन मन्दिर चली।। ७।।

सोरठा

जानि गौरी अनुकूल सिय, हिय हरषु न जाइ कहि।
मंजुल मंगल मूल, वाम अंग फरकन लगे।।

https://www.bhaktipower.com/